

श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार ईश्वर का स्वरूप

वन्दना पंवार¹
डा० ईश्वर भारद्वाज²

भारतीय दर्शन परम्परा में ईश्वर की व्याख्या विविध रूपों में की गई है। श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय दर्शन का शीर्षतम ग्रन्थ है, जिसमें ईश्वर की व्याख्या बहुत ही स्पष्ट ढंग से की गई है। आध्यात्मिक शास्त्र की दृष्टि से यह एक अनुपम ग्रन्थ है। इसमें अनेक आध्यात्मिक विषयों का समावेश है। भारतीय ऋषि मुनियों ने ईश्वर के स्वरूप का व्याख्यान, मानव समाज के उत्थान के लिए, अलग-अलग ग्रन्थों व दर्शनों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जिससे वह इनके अध्ययन से ईश्वर विषयक ज्ञान प्राप्त कर कल्याणकारी मार्ग को अपना सके। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन की ईश्वरीय सत्ता की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए विभिन्न माध्यम से ईश्वरीय अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने केवल एक साधन मार्ग को ही नहीं चुना अपितु विभिन्न साधन मार्ग, जैसे निष्काम कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, ध्यानयोग इत्यादि का उल्लेख किया है। अतः हम यहां गीता में प्रतिपादित ईश्वर के स्वरूप का विवेचन करेंगे।

गीता में ईश्वर को सम्पूर्ण भूतों का सनातन कारण माना जाता है। यह चराचर जगत नाशवान है अर्थात् क्षर है। केवल ईश्वर ही अविनाशी है। वही सभी जगह व्याप्त है, अनित्य है, उसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता है।

वही बीजरूप ईश्वर जगत का कार्यरूप है और उसका कारण है।³ वही जानने योग्य है। महर्षि मनु कहते हैं जो सबको शिक्षा देने वाला, ज्ञान प्रदान करने वाला, सूक्ष्म रूप, स्वप्रकाश स्वरूप, समाधिस्थ, बुद्धि से जानने योग्य है, उसको परम पुरुष मानना चाहिये।⁴ योगदर्शन ने भी ईश्वर को को पुरुषविशेष की संज्ञा दी गई है। महर्षि पतंजलि कहते हैं, जो लोग पंच क्लेशो, विविधकर्मों, अविद्या, सुख-दुःख आदि भोगों के संस्कार के सम्बन्ध से रहित भिन्न स्वभाव वाला, चेतन विशेष ईश्वर है।⁵

वेद कहता है - ईश्वर की शीघ्रकारी, अकाय, शरीररहित, छिद्ररहित नाड़ी के बंधन से रहित पापरहित, सर्वजगह व्यापक और सभी वेदों का उपदेश करने वाला वही परमात्मा (ईश्वर) है।⁶ और जिस दिव्य और अलौकिक शक्ति से यह विश्व चल रहा है, उस शक्ति का कोई अन्त नहीं है। ईश्वर निराकार से साकार में आकर समाज का उद्धार करता है, लेकिन अपने योगमाया में बंधे रहने से अस्पष्ट है। ईश्वर उसी प्रकार अदृश्य है, जिस प्रकार धागा सभी मणियों को गूँथता है। लेकिन अपने आप नहीं दिखता है। उसी प्रकार ईश्वर अपनी प्रकृति के द्वारा सम्पूर्ण जगह में गुथा हुआ है।⁷ उसकी माया की सामर्थ्य इतनी ऊँची है कि सम्पूर्ण मनुष्य उसमें स्थित होते हुए भी अलग दिखते हैं। इसी प्रकार जगत ईश्वर की संकल्प शक्ति में स्थित है।⁸

1. शोधछात्रा योग एवं मानव चेतना विज्ञान, गु०काँ०वि०हरिद्वार
मो. नं. 8393041728, ईमेल – vandapanwar14@gmail.com
2. प्रो. एवं अध्यक्ष, योग एवं मानव चेतना विज्ञान विभाग, गु०काँ०वि०हरिद्वार

3. गीता-11/38
4. मनुस्मृति 12/122
5. योगदर्शन 1/24
6. यजुर्वेद 40/8
7. गीता 7/7
8. गीता 9/6

ईश्वर के विविध नाम:

गीता में ओ३म, तत-सत इन तीनों शब्दों के द्वारा ईश्वर को बताया गया है।⁹ यही तीन शब्द इस सम्पूर्ण विश्व के आधार स्तम्भ हैं। ईश्वर को ओंकार स्वरूप माना है। इसे पुरुषोत्तम भी कहा गया है।¹⁰

महर्षि मनु कहते हैं- "परमात्मा को कोई अग्नि, कोई मनु, कोई इन्द्र, कोई प्राण, ब्रह्मा आदि नामों से कहते हैं। और इसमें महर्षि मनु मुख्य ओ३म नाम को ही मानते हैं।¹¹ और वेद कहता है - सूक्ष्म, सर्वज्ञ, सभी जगह व्याप्त परमात्मा ज्ञानस्वरूप पूज्य होने से अग्नि कहलाता है। प्रलयकाल में सबको ग्रहण करने वाला आदित्य है। बलवान होने से वायु, आनन्द स्वरूप होने से चन्द्रमा, शुद्ध स्वरूप होने से शुक्र, सभी की रचना करने से ब्रह्मा, सर्वत्र व्यापक होने से आप और सभी प्रजाओं का स्वामी होने से प्रजापति कहलाता है।¹²

महर्षि दयानन्द जी कहते हैं - ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, पुरुषोत्तम, सम्पूर्ण विश्व का आधार, आदि नामों का उल्लेख करते हैं।¹³ ऋग्वेद कहता है - परमात्मा एक है। एक होते हुए भी लोग भिन्न-भिन्न नामों से सम्बोधित करते हैं।

ईश्वर के विविध रूप :

गीता में श्री कृष्ण भगवान अर्जुन को अपने स्वरूप का बखान करते हुये कहते हैं। है अर्जुन मेरे विस्तार का कोई अन्त नहीं है।¹⁴ मैं सभी के हृदय में स्थित सबकी आत्मा हूँ।¹⁵ मैं ज्योतियों में सूर्य हूँ। सभी नक्षत्रों का अधिपति चन्द्रमा हूँ। वेदों में सामवेद। देवों में इन्द्र। इन्द्रियों में मन, प्राणियों में चेतना¹⁷, पर्वतों में सुमेरु पर्वत हूँ।¹⁸ पुरोहितों में मुखिया बृहस्पति, जलाशयों में समुन्द्र¹⁹, वृक्षों में पीपल, मनुष्यों में राजा²⁰, शास्त्रों में वज्र, गौओं में कामधेनु, सर्पों में सर्पराज²¹, पशुओं में मृगराज सिंह, पक्षियों में गरूड²², मछलियों में मगर, नदियों में भागीरथी गंगा हूँ।²³ है अर्जुन मैं इस सम्पूर्ण जगत को अपनी योगमाया से धारण करके स्थित हूँ। वह ईश्वर इस सृष्टि में अनेक रूपों में विद्यमान है।

गीता में ईश्वर के विविध कार्य :

अब ईश्वर के विभिन्न कार्यों का वर्णन करते हैं। ईश्वर का कार्य इस संसार की उत्पत्ति कर्ता और विनाशकर्ता है। सर्वान्तर्यामी परमात्मा ही संसार को चक्रवत् चलाता है। ईश्वर सभी प्राणियों का आधार है। ईश्वर हमें कठिनाईयों में सहायता प्रदान करता है। गीता में कहा है - ईश्वर माया को अपने वश में रखने वाला है। ईश्वर प्रकृति को अपने वश में करके इसी योगमाया के द्वारा प्रकट होता है।²⁴ डा० राधाकृष्णन ने ईश्वर के बारे में बताया

-
9. गीता - 17/23, 24, 25, 26
 10. गीता- 8/12, 13, 14
 11. मनुस्मृति 12/123
 12. यजुर्वेद 32/1
 13. आर्य समाज का द्वितीय नियम
 14. गीता 10/19
 15. गीता 10/20
 16. गीता 10/21
 17. गीता 10/22
 18. गीता 10/23

है। ईश्वर अनी इच्छाओं को साकार रूप देने के लिए हमें अपना स्नेह प्रदान करता है। वह असत्य, अशिव, असुन्दर को सत्य, शिवम, सुन्दर में प्रमाणित करने में सहायता के भार को वहन करता है।²⁵

वह सत्य एवं प्रेम का स्वरूप ही नहीं बल्कि वह न्याय का स्वरूप भी है। वह अपने नियमों के अनुसार ही कार्य करता है। ईश्वर मनुष्य को कर्मों के अनुसार फल देने वाला है। वह ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड के अन्दर स्थित है। वही इस सारी सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता एवं संहार करता है।²⁶ उसी ईश्वर रूपी पिता की माया से सृष्टिचक्र चल रहा है। वही स्वयं प्रकृति के गर्भ में बीज डालकर जगत को उत्पन्न करने के कारण पिता कहलाता है।²⁷

महर्षि मनु कहते हैं - परमात्मा पंचमहाभूतों से सब प्राणियों को युक्त करके अर्थात् उनकी उत्पत्ति करके और उनमें व्यापक रहकर उत्पत्ति, वृद्धि और विनाश करते हुए इस संसार को चक्र की तरह चलाता रहता है।²⁸

वह अविनाशी परमाद्यत्मा जागने और सोने की अवस्थाओं के द्वारा इस समस्त जड़ चेतन जगत को निरन्तर चलाता और मारता है। कारण में लीन रहता है।²⁹

इस प्रकार वह सूक्ष्म अविनाशी, अजर अमर परमात्मा सब देवताओं को रखने वाला, वही सभी को फल देने वाला है। सारा सम्पूर्ण जगत उस परम सत्ता में ही स्थित है। वही सर्वज्ञ व्याप्त है। वही मनुष्यों का उपास्य देव है।

-
19. गीता 10/24
 20. गीता 10/27
 21. गीता 10/28
 22. गीता 10/30
 23. गीता 10/31
 24. गीता 10/32
 25. राधाकृष्णन, जीवन की आध्यात्मिक दृष्टि पृ0 433
 26. अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्व मध्यं च भूतानामन्त एव च॥ (गीता- 10/20)
 27. सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः।
तासां ब्रह्म महधोनिरहं बीजप्रदः पिता॥ (गीता-14/4)
 28. एषः सर्वाणि भूतानि यश्चभित्रयाप्य मूर्तिभिः।
जन्मवृद्धिक्षयैर्नित्यं संसारयति चक्रवत्। (मनु0 12/24)
 29. एवं स जाग्रत्स्वप्नाभ्यमिदं सर्वं चराचरम्।
संजीवयती चाजस्त्रं प्रमापयति चाल्ययः। (मनु0 1/58)